यदुक्तं तदेवदंवाक्यंपुनर्बभाषे ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ मिथ्यासंतापं तन्मूलंशोकं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १९ ॥ तेनवीरेणेंद्रजिता तपसापीतस्यख्यंभुवोवरदानान्तिकुं कि विद्यासंतापं तन्मूलंशोकं ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ तेनवीरेणेंद्रजिता तपसापीतस्यख्यंभुवोवरदानान्तिकुं कि विश्वासंतापं तिन्द्रत्याने विद्यासंतापं तिन्द्रत्याने विद्यासंतापं ॥ १२ ॥ सएषएवंप्रका कि विद्यासंतापं तिन्द्रत्याने विद्यासंत्र तिन्द्रत्याने विद्यासंतापं तिन्द्रत्याने विद्यासंतापं तिन्द्रतिन्द्रत्याने विद्यासंतापं तिन्द्रतिन्द्रत्याने विद्यासंतापं तिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्तिन्तिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्तिन्दिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्तिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन्द्रतिन् राघवस्यवचःश्रुत्वावाक्यंवाक्यविशारदः॥यत्तत्पुनिरदंवाक्यंबभाषेयविभीषणः॥४॥ यथाज्ञनंमहावाहोत्वयाग्त्मिनवेशनं॥त त्तथानुष्ठितंवीरत्वद्वाक्यसमनंतरं॥५॥ तान्यनीकानिसर्वाणिविभक्तानिसमंततः॥ विन्यस्तायूथपाश्चैवयथान्यायंविभागशः॥ ६॥ भूयस्तुममविज्ञाप्यंतन्छणुष्वमहाप्रभो॥त्वय्यकारणसंतमेसंतमहृदयावयं॥७॥त्यजराजन्निमंशोकंमिथ्यासंतापमागतं॥यदि यंत्यज्यतांचिताश्च्रहर्षविवधिनी ॥८॥ उद्यमःक्रियतांवीरहर्षःसमुपसेव्यतां॥ प्राप्तव्यायदिनेसीताहंतव्याश्चितिशाचराः॥९॥ रघुनं दनवस्यामिश्रूयतांमेहिनंवचः॥ साध्वयंयातुसोमित्रिर्वलेनमहतादतः ॥ १०॥ निकुंभिलायांसंत्रानंहंतुंरावणिमाहवे ॥ धनुर्मेडल निर्मुकैराशीविषविषोपमैः॥ ११॥ तेनवीरेणतपसावरदानात्स्वयंभुवः॥ अस्रंब्रह्मशिरःप्राप्तंकामगाश्चतुरंगमाः॥ १२॥ सएषि लसैन्येनप्रामःकिलनिकुंभिलां ॥ य्युत्तिष्ठेत्कतंकर्महतान्सर्वीश्रविद्धिनः ॥ १३ ॥ निकुंभिलामसंप्राममकताप्निचयोरिपः ॥ वा मानतायिनंहन्यादिंद्रश्त्रोसतेवधः॥ १४॥ वरोदत्तोमहाबाहोसर्वलोकेश्वरेणवै॥ इत्येवंविहितोराजन्वधस्तस्येषधीमतः॥ १५॥ व धायेंद्रजितोरामसंदिशस्वमहावलं॥हततस्मिन्हतंविद्धिरावणंससुरहणं॥१६॥ इत्याह॥निकृभिलामित॥निकृभिलां तद्यागभूमि महा लीक्षेत्रं तदाख्यन्ययोधमूलहृष्यप्राप्तं अकृताप्तिं अहुताभिचारहोमं॥ अहुताग्निमितिपाठांतरं॥ आततायिनं गृहीतशस्त्रं योरिपुर्हन्याद्युध्येत्॥हेइंद्रशत्रो सरिपुस्तेवधः कर्ताभविष्यति॥१४॥ सर्वलोकेश्वरेण ब्रह्मणा एषवरोदत्तोवेपसिद्धः राजन्धीमतस्तस्येवमेषवधोविहिनोब्रह्मणा॥१५॥१६॥ कालीक्षेत्रं तदाख्यन्ययोधमूलहृपमप्राप्तं अकृतामि अहुताभिचारहोमं ॥ अहुतामिमितिपाठांतरं ॥ आततायिनं गृहीतशस्त्रं योरिपुर्हन्याद्युध्येत् ॥ हेइंद्रशत्रो सरिपुस्तेवधः वधकर्ताभविष्यति ॥ १४ ॥ सर्वलोकेश्वरेण ब्रह्मणा एषवरोदत्तोवैपसिद्धः राजन्धीमतस्तरयेवमेषवधोविहितोब्रह्मणा ॥ १५॥ १६ ॥